|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 25. Dezember | | |
| **Hochfest der Geburt des Herrn** | | |
| **1. Weihnachtstag – Am Tag** | | |
| Erste Lesung: Jes 52,7-10; Zweite Lesung: Hebr 1,1-6; Evangelium.: Joh 1,1-18 (oder 1,1-5.9-14) | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 237 | Vom Himmel hoch |
|  | GL 241, 1-3 | Nun freut euch, ihr Christen |
|  | GL 732, 1-3 | Auf, Christen, singt festliche Lieder |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 159 | Licht, das uns erschien |
|  | GL 160 | Gott des Vaters ew’ger Sohn |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 245, 1-3 | Menschen, die ihr wart verloren |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 98, 1-6 | |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 55, 1 | Jubelt, ihr Lande, dem Herrn |
|  | oder |  |
|  | GL 736, 1+3 | Singen wir mit Fröhlichkeit |
|  |  |  |
|  |  | |
| Halleluja-Ruf: | GL 244 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Aufgeleuchtet ist uns aufs Neue der Tag der Erlösung:* | |
|  | *Ein großes Licht ist heute auf Erden erschienen.* | |
|  | *Kommt, ihr Völker, und betet an den Herrn, unseren Gott.* | |
|  |  | |
| Credo: | GL 586, 2 | Das große Glaubensbekenntnis |
|  | GL 247, 1-4 | Lobt Gott, ihr Christen |
|  | GL 737, 1-3 | Du Weltenheiland |
|  | GL 731 | Zur Welt herab |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 243, 1-3 | Es ist ein Ros entsprungen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 199 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 239, 1-3 | Zu Bethlehem geboren |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 253, 1-3 | In dulci jubilo |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 238, 1-3 | O du fröhliche |